

---

# Yamunashtakam 1

यमुनाष्टकम् १

## Document Information

---

Text title : yamunaashhTakam 1

File name : yamunaa81.itx

Category : aShTaka, devii, nadI, devI, shankarAchArya

Location : doc\_devii

Author : Shankaracharya

Transliterated by : Sridhar Seshagiri seshagir at engineering.sdsu.edu

Proofread by : Sridhar Seshagiri seshagir at engineering.sdsu.edu

Latest update : August 23, 2000

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 2, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

# Yamunashtakam 1

## यमुनाष्टकम् १



॥ श्रीः ॥

मुरारिकायकालिमालवामवारिधारिणी  
तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोकशोकधारिणी ।  
मनोऽनुकूलकूलकुञ्जपुञ्जधूतदुर्मदा  
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ १ ॥

मलापहारिवारिपूरिभूरिभण्डितामृता  
भृशं प्रवातकप्रपञ्चनातिपण्डितानिशा ।  
सुनन्दनन्दिनाङ्गसङ्गरागरञ्जिता छिता  
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ २ ॥

लसत्तरङ्गसङ्गधूतभूतजतपातका  
नवीनमाधुरीधुरीणभञ्जितयातका ।  
तटान्तवासदासलंसंसृतान्दिकामदा  
var1 संसृता छि कामदा var2 संवृताह्निकामदा  
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ३ ॥

विहारसस्वेदभेदधीरतीरमारुता  
गता गिरामगोथरे यदीयनीरथारुता ।  
प्रवालसाड्यर्यपूतमेदिनीनदीनदा  
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ४ ॥

तरङ्गसङ्गसैकतान्तरातितं सदासिता  
शरत्रिशाकरांशुमञ्जुमञ्जरी सभाजिता ।  
भवार्चनाप्रथारुणाम्बुनाधुना विशारदा  
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ५ ॥

जलान्तकेलिकारियारुणधिकाङ्गरागिणी

स्वभर्तुरन्यदुर्लभाऽगताऽगतांशभागिनी ।  
स्वदत्तसुमसमसिन्धुभेदिनातिकोविदा  
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ६ ॥

जलव्युताव्युताऽगरागलम्पटालिशालिनी  
विलोलराधिकाकथान्तयम्पकालिमालिनी ।  
सदावगाढनावतीर्णभर्तुभृत्यनारदा  
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ७ ॥

सदैव नन्दिनन्दकेलिशालिकुञ्जमञ्जुला  
तटोत्थकुल्लमल्लिकाकदम्बरैरुसूसूज्ज्वला ।  
जलावगाढिनां नृणां भवाब्धिसिन्धुपारदा  
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ८ ॥

एति श्रीमत्परमहंसपरिप्राजकाचार्यस्य  
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ  
यमुनाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by Sridhar Seshagiri

---



*Yamunashtakam 1*

pdf was typeset on February 2, 2024



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

